सेवा समर्पण

वर्ष-37, अंक-11, श्रावण-भाद्रपद, विक्रम सम्वत् 2077, अगस्त, 2020

स्वाभिमान की पुनः स्थापना

श्री राम मंदिर के माध्यम से भारतीयों के मान-सम्मान और स्वाभिमान की फिर से स्थापना होगी।

सेवा समर्पण

वर्ष-37, अंक-11 अगस्त, 2020

कुल पृष्ठ-14

परामर्शदाता
आचार्य मायाराम पतंग
डॉ. राम कुमार

●

प्रबन्धक
श्री बिशनदास चावला

●

सम्पादक
श्रीमती इन्दिरा मोहन

सहसम्पादक
शिवाली अग्रवाल

पृष्ठ सज्जा
मणिशंकर

●

कार्यालय
सेवाकुंज, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15
E-mail: sewasamarpan@sewabhartidelhi.org
Website: www.sewabhartidelhi.org

●

एक प्रति : 10/-रुपये
वार्षिक शुल्क : 100/-रुपये

विषय-सूची

शीर्षक	लेखक	पृ.
सम्पादकीय		03
500 वर्ष की यात्रा	प्रतिनिधि	04
अयोध्या के नायक नायर	प्रतिनिधि	06
जानिए अपने झंडे को	आचार्य मायाराम पतंग	07
81 साल के 'युवक' शर्मा जी		08
रक्षासूत्र बना समरसता-सूत्र	दीप्ति अग्रवाल	09
न छोड़ें सकारात्मकता का साथ	डॉ. आराधना शर्मा	10
विनीता की दो भावपूर्ण कविताएँ		11
वे पाँच भाई	अरुणिमा देव	12
बंगाल में बन रहा है 113 मीटर ऊँचा श्रीकृष्ण मंदिर	निशान्त	13
चित्रों में रक्षाबंधन		14

प्रसिद्ध संत उड़िया बाबा गंगा के घाट पर बैठकर श्रद्धालुओं को आध्यात्मिक सत्संग का लाभ देते थे। रोज उनके सत्संग के समय एक गरीब सफाई करने वाला व्यक्ति, जिसका नाम चिम्मन था, वह भी गुजरा करता था। बाबा की बातें सुनकर उसका भी मन होता कि वह बाबा से पूछे कि उसे भगवान कैसे मिलेंगे, परन्तु अपनी सामाजिक स्थिति के विषय में सोचकर वह मन मसोसकर रह जाता था। उसकी इस भावना को बाबा ने भांप लिया और उन्होंने उसे एक दिन आवाज देकर बुलाया और बोले, ''बेटा! भगवान भक्त की जाति पूछकर थोड़े ही आते हैं, वे तो उसकी पुकार की तीव्रता सुनकर आते हैं। तू उनको दिल लगाकर बुलाया कर, वे दौड़े चले आएंगे।'' बाबा की बातें सुनकर उसका जीवन बदल गया।

पाठकों से अनुरोध

सेवा समर्पण के सुधी पाठकों से अनुरोध है कि वे हर अंक में प्रकाशित लेखों और महापुरुषों के विचारों पर अपनी राय अवश्य भेजें।

पता : संपादक, सेवा समर्पण,
13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15, E-mail: info@sewabhartidelhi.org

भारत का भाग्योदय

अंततः 5 अगस्त, 2020 को वह शुभ घड़ी आ ही गई, जिसकी प्रतीक्षा हिन्दू समाज लगभग 500 साल से कर रहा था। इस दिन श्रीराम जन्मभूमि, अयोध्या में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने रामलला के भव्य मंदिर बनाने के लिए भूमिपूजन किया। अनुमान है कि लगभग चार साल में मंदिर बनकर तैयार हो जाएगा। इस मंदिर का सपना हर हिन्दू देख रहा था। अब उनका यह सपना पूरा होने जा रहा है।

यह उन भारतीयों के लिए गर्व की बात है, जो मानते हैं कि उनके पूर्वज श्रीराम थे। यह हम सबके लिए सौभाग्य की बात है कि हम अपने जीवनकाल में भव्य श्रीराम मन्दिर के दर्शन कर पाएंगे। यह सौभाग्य हमें उन लाखों रामभक्तों के कारण मिला है, जिन्होंने इसके लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया। उल्लेखनीय है कि श्रीराम जन्मभूमि के लिए 76 युद्ध लड़े गए। लगभग 3,50,000 रामभक्तों ने अपने प्राणों की आहुति दे दी। इसके बाद भी हिन्दुओं ने कभी श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन को कमजोर नहीं होने दिया।

1980 के दशक में इस आन्दोलन को तब और गति मिली, जब संघ विचार परिवार ने इसकी कमान थामी। श्री अशोक सिंहल, श्री आचार्य गिरिराज किशोर, श्री मोरोपंत पिंगले जैसे श्रेष्ठ और वरिष्ठ कार्यकर्ताओं ने रामलला के मंदिर को बनाना ही अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया था। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए इन लोगों ने कितने कष्ट सहे और कितनी आलोचनाएँ झेलीं, इनकी कोई सीमा नहीं है। इन लोगों ने भारत के स्वाभिमान और मान-सम्मान को वापस लाने के लिए अपना पूरा जीवन खपा दिया।

उल्लेखनीय है कि बाबर ने 21 मार्च, 1528 को हिन्दुओं के स्वाभिमान को कुचलने, उनके मान-सम्मान को धूल धूसरित करने, उन्हें पराजय का अनुभव कराने और सबसे बड़ी बात हिन्दुओं के मनोबल को गिराने के लिए ही रामलला के मंदिर को तोड़कर उस स्थान पर एक ढांचा बनाया था। ढांचा इसलिए कहा जाता है कि उसमें मीनारें नहीं थीं। मीनारों के बिना मस्जिद नहीं होती है और मीनार इसलिए नहीं बन पाई कि हिन्दुओं ने कभी बनाने का अवसर ही नहीं दिया।

18वीं शताब्दी के मध्य में मुगल सत्ता के पतन होने के बाद भी हिन्दू अपने अराध्य श्रीराम मन्दिर के लिए लड़ते रहे। कई बार तो हिन्दुओं ने श्रीराम जन्मभूमि पर कब्जा भी कर लिया, लेकिन उन्हें स्थाई सफलता नहीं मिली।

9 नवंबर, 2019 को सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि विवादति स्थल ही श्रीराम नज्मभूमि है। इसके साथ ही वहाँ भव्य मंदिर बनाने की प्रक्रिया चली।

अयोध्या का राम मंदिर भारत के लोगों में एक नई ऊर्जा भरने का काम करेगा और यह ऊर्जा भारत को हर तरह से आगे ले जाएगी। इसलिए कहा जाने लगा है कि अब भारत का भाग्योदय हो चुका है। प्रभु रामजी की कृपा से भारतीयों की एकता और सद्बुद्धि ऐसी ही बनी रही तो विश्वास मानिए कि आने वाले कुछ वर्ष में भारत की धाक की गूंज पूरी दुनिया में सुनाई देगी। उस दिन की प्रतीक्षा हर पल की जा रही है। आशा है यह प्रतीक्षा भी श्री नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री रहते ही पूरी होगी। ❐

500 वर्ष की यात्रा

❍ प्रतिनिधि

श्रीराम की जन्मभूमि पर मंदिर बनाने के लिए हिंदुओं ने लगभग 500 वर्ष तक संघर्ष किया। इस संघर्ष में हजारों हिंदुओं ने अपनी बलि चढ़ा दी। अनगिनत लोगों ने इस मंदिर के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। यहाँ अयोध्या से जुड़ीं प्रमुख घटनाओं को प्रस्तुत किया जा रहा है-

अयोध्या की स्थापना : वैवस्वत मनु महाराज द्वारा सरयू तट पर अयोध्या की स्थापना की गई।

श्रीराम का जन्म : श्रीराम का जन्म त्रेता युग में अयोध्या में हुआ।

श्रीराम मंदिर : श्रीरामजन्मभूमि पर स्थित मंदिर का जीर्णोद्धार कराते हुए 2100 साल पहले सम्राट शकारि विक्रमादित्य द्वारा काले रंग के कसौटी पत्थर वाले 84 स्तंभों पर विशाल मंदिर का निर्माण करवाया गया।

मंदिर का ध्वंस : मीर बाकी, जो मुस्लिम आक्रांता बाबर का सेनापति था, ने 1528 ईस्वी में श्रीराम का यह विशाल मंदिर ध्वस्त किया।

पहला 15 दिवसीय संघर्ष : इस्लामी आक्रमण ाकारियों से मंदिर को बचाने के लिए रामभक्तों ने 15 दिन तक लगातार संघर्ष किया, जिसके कारण आक्रांता मंदिर पर चढ़ाई न कर सके और अंत में मंदिर को तोपों से उड़ा दिया। इस संघर्ष में 1,76,000 रामभक्तों ने मंदिर रक्षा हेतु अपने जीवन की आहुति दी।

ढांचे का निर्माण : ध्वस्त मंदिर के स्थान पर मंदिर के ही टूटे स्तंभों और अन्य सामग्री से आक्रांताओं ने मस्जिद जैसा एक ढांचा जबरन वहाँ खड़ा किया, लेकिन वे अजान के लिए मीनारें और वजू के लिए स्थान कभी नहीं बना सके।

संघर्ष : 1528 से 1949 ईस्वी तक के कालखंड में श्रीरामजन्मभूमि स्थल पर मंदिर निर्माण हेतु 76 संघर्ष या युद्ध हुए। रामलला प्रकट हुए : 22 दिसंबर, 1949 की मध्यरात्रि में जन्मभूमि पर रामलला प्रकट हुए। वह स्थान ढांचे के बीच वाले गुंबद के नीचे था।

मंदिर पर ताला : कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए तत्कालीन सिटी मजिस्ट्रेट ने ढांचे को आपराधिक दंड संहिता की धारा 145 के तहत रखते हुए प्रिय दत्त राम को रिसीवर नियुक्त किया। सिटी मजिस्ट्रेट ने मंदिर के द्वार पर ताले लगा दिए, लेकिन एक पुजारी को दिन में दो बार ढांचे के अंदर जाकर दैनिक पूजा और अन्य अनुष्ठान संपन्न करने की अनुमति दी।

मंदिर बनाने का संकल्प : उत्तर प्रदेश के एक वरिष्ठ कांग्रेसी नेता दाऊदयाल खन्ना ने मार्च, 1983 में मुजफ्फरनगर में आयोजित हिंदू सम्मेलन में अयोध्या, मथुरा और काशी के स्थलों को फिर से अपने अधिकार में लेने हेतु हिंदू समाज का प्रखर आह्वान किया।

पहली धर्म संसद : अप्रैल, 1984 में विश्व हिंदू परिषद् द्वारा विज्ञान भवन (नई दिल्ली) में आयोजित पहली धर्म संसद ने जन्मभूमि के द्वार से ताला खुलवाने हेतु जनजागरण यात्राएँ करने का प्रस्ताव पारित किया।

राम जानकी रथ यात्रा : विश्व हिंदू परिषद ने अक्तूबर, 1984 में जनजागरण हेतु सीतामढ़ी से दिल्ली तक राम-जानकी रथ यात्रा शुरू की। लेकिन इंदिरा गांधी की निर्मम हत्या के चलते एक साल के लिए यात्राएँ रोकनी पड़ी थीं। अक्तूबर, 1985 में रथयात्राएँ पुनः प्रारंभ हुईं।

ताला खुला : इन रथ यात्राओं से हिंदू समाज में ऐसा प्रबल उत्साह जगा कि फैजाबाद के जिला दंडाधिकारी ने 1 फरवरी, 1986 को श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के द्वार पर लगा ताला खोलने का आदेश दिया।

रामशिला पूजन : जनवरी, 1989 में प्रयागराज में कुंभ मेले के पवित्र अवसर पर त्रिवेणी के किनारे विश्व हिंदू परिषद् ने धर्म संसद का आयोजन किया। इसमें तय किया गया कि देश के हर मंदिर, हर गाँव में रामशिला पूजन कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

मंदिर का शिलान्यास : 9 नवंबर, 1989 को बिहार के श्री कामेश्वर चौपाल द्वारा शिलान्यास किया गया।

कारसेवा का आह्वान : 24 जून, 1990 को संतों ने देवोत्थान एकादशी (30 अक्तूबर 1990) से मंदिर निर्माण हेतु कारसेवा शुरू करने का आह्वान किया।

हिंदुत्व की विजय : 30 अक्तूबर, 1990 को हजारों रामभक्तों ने मुलायम सिंह के नेतृत्व वाली तत्कालीन उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा खड़ी की गई अनेक बाधाओं को पार कर अयोध्या में प्रवेश किया और विवादित ढांचे के ऊपर भगवा ध्वज फहरा दिया।

कारसेवकों का बलिदान : 2 नवंबर, 1990 को मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव ने कारसेवकों पर गोली चलाने का आदेश दिया, जिसमें कोलकाता के राम कोठारी और शरद कोठारी सहित अनेक रामभक्तों ने अपने जीवन की आहुतियाँ दीं।

ऐतिहासिक रैली : 4 अप्रैल, 1991 को दिल्ली के बोट क्लब पर अभूतपूर्व रैली हुई।

अपमान का प्रतीक ध्वस्त : लाखों रामभक्त 6 दिसंबर, 1992 को कारसेवा हेतु अयोध्या पहुँचे और अपमान के प्रतीक मस्जिदनुमा ढांचे को ध्वस्त कर दिया। उसी दिन कारसेवकों द्वारा तिरपाल की मदद से अस्थायी मंदिर का निर्माण किया गया और वहाँ रामलला को विराजमान कर दिया गया। मार्च, 2020 में रामलला को अस्थाई मंदिर में स्थापित किया गया है।

उच्च न्यायालय का निर्णय : 30 सितंबर, 2010 को इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लवनऊ खंडपीठ ने विवादित ढांचे के संबंध में निर्णय सुनाया। न्यायमूर्ति धर्मवीर शर्मा, न्यायमूर्ति सुधीर अग्रवाल एवं न्यायमूर्ति एस.यू. खान ने एकमत से माना कि जहाँ रामलला विराजमान हैं, वही श्रीराम की जन्मभूमि है।

सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय : 9 नवंबर, 2019 को सर्वोच्च न्यायालय के पाँच न्यायाधीशों की पीठ ने एकमत से निर्णय दिया कि विवादित स्थल ही राम मंदिर है।

कानूनी प्रक्रिया पूरी : करीब 70 साल (जिला न्यायालय में 40 साल, उच्च न्यायालय में 20 साल और सर्वोच्च न्यायालय में 10) की सुनवाई के बाद इस मामले में न्यायालय की प्रक्रिया पूरी हुई।

5 अगस्त, 2020 : इस दिन प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने श्रीराम जन्मभूमि पर बनने वाले भव्य मंदिर के लिए भूमि-पूजन किया। इस अवसर पर सरसंघचालक श्री मोहनराव भागवत, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सहित अनेक संत-महात्मा उपस्थित थे। ❐

अब भी तो खोलो नयन, नींद से जागो। जिसकी ज्वाला बुझ गई, वही पापी है।
है जहां खड्ग, सब पुण्य वहीं बसते हैं। वीरता जहां पर नहीं, स्वार्थ की जय है।
– रामधारी सिंह दिनकर

अयोध्या के नायक नायर

❍ प्रतिनिधि

आज जब अयोध्या में बनने वाले श्रीराम मंदिर की चर्चा पूरे विश्व में हो रही है तब कृष्ण करुणाकर नायर, जो के.के नायर के नाम से ज्यादा जाने जाते हैं, बहुत याद आते हैं। श्री नायर फैजाबाद के जिलाधिकारी थे। उन्हें 1 जून, 1949 को फैजाबाद का जिलाधिकारी बनाया गया था। मानो रामलला ने उनको स्वयं फैजाबाद बुलाया हो। उनके जिलाधिकारी रहते हुए 22-23 दिसंबर, 1949 की रात को श्रीराम जन्मभूमि पर रामलला का प्राकट्य हुआ और 23 दिसंबर की शुभ प्रात:काल बड़ी संख्या में भक्तों और श्रद्धालुओं की भारी भीड़ तथाकथित बाबरी ढांचे (वास्तविक राम जन्मभूमि) पर रामलला का दर्शन करने के लिए एकत्र होने लगी। इसके बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री गोविंद बल्लभ पंत को कहा कि किसी भी स्थिति में रामलला की प्रतिमा उस स्थान से तत्काल हटा दी जानी चाहिए। इसके बाद राज्य सरकार ने श्री नायर को प्रतिमा हटाने का आदेश दिया लेकिन उनके मन में तो कुछ और ही था। उन्होंने प्रतिमा हटाने से इंकार कर दिया। राज्य सरकार की बात उन्होंने नहीं मानी तब जवाहरलाल नेहरू ने स्वयं उन्हें वहाँ से प्रतिमा हटाने का आदेश दिया, किन्तु श्री नायर टस से मस नहीं हुए।

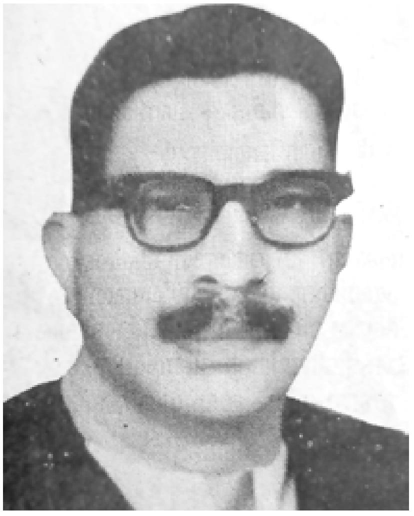

उन्होंने कहा कि प्रतिमा किसी ने रखी नहीं है, रामलला का प्राकट्य हुआ है और जब रामलला का प्राकट्य हुआ है तो उन्हें कौन हटा सकता है? अंतत: श्री नायर को निलंबित कर दिया गया। उन्होंने अपने निलंबन को इलाहाबाद उच्च न्यायालय में चुनौती दी और उनका निलंबन उच्च न्यायालय ने निरस्त कर दिया। श्री नायर का संकल्प तो कुछ और ही था उन्होंने आगे नौकरी करने से इंकार कर दिया और स्वेच्छा से सेवानिवृत्ति ले ली। 1952 में उन्होंने इलाहाबाद उच्च न्यायालय में वकालत शुरू कर दी।

बाद में पंडित दीनदयाल उपाध्याय और श्री अटल बिहारी बाजपेई के सम्पर्क में आने के बाद उन्होंने भारतीय जनसंघ की सदस्यता ले ली। 1967 में बहराइच से वे भारतीय जनसंघ के टिकट पर सांसद चुने गए। उनकी पत्नी श्रीमती शकुंतला नायर कैसरगंज से सांसद चुनी गईं। उनकी ख्याति की स्थिति यह हो गई थी कि उनका चालक भी विधायक चुन लिया गया।

श्री नायर का जन्म 11 सितंबर, 1907 को केरल में एलेप्पी में हुआ था और 7 सितंबर, 1977 को उन्होंने इस पार्थिव देह को त्याग दिया। श्री नायर की शिक्षा-दीक्षा मद्रास और लंदन में हुई थी। 1930 में वे आईसीएस बने और उत्तर प्रदेश में कई जिलों के जिलाधिकारी रहे। आज के आईएएस को तब आईसीएस कहा जाता था। ❒

जानिए अपने झंडे को

○ आचार्य मायाराम पतंग

15 अगस्त को हमारे प्रधानमंत्री लालकिले पर तिरंगा झंडा फहराते हैं। हमारा राष्ट्रीय झंडा तिरंगा है जिसके मध्य में अशोक चक्र बना हुआ है। भारत एक प्राचीन देश है। यहां हजारों वर्ष से भगवा (केशरिया) रंग का झंडा ही पूजनीय रहा है। अलग-अलग क्षेत्रों के राजा अपनी मान्यता और वेश परंपरा के अनुरूप इसी केशरिया ध्वज में अपने प्रतीक चिन्ह लगा लेते थे। जैसे किसी ने सूर्य, किसी ने हनुमान जी, किसी ने चक्र, किसी ने सिंह प्रतीक लगाकर इसे अपनाया था। अंग्रेजों का राज था तो हमारी गुलामी के कारण अंग्रेजों का यूनियन जैक ही भारत पर भी लहराने लगा। महात्मा गांधी जी के नेतृत्व में जनता ने अंग्रेजों के विरुद्ध आजादी की लड़ाई लड़ी। तब 1929 ई. में एक झंडा कमेटी बनाई गई और भारत का झंडा कैसा हो? यह निर्धारित करने का दायित्व उसे सौंपा गया। जवाहरलाल नेहरू तथा मौलाना आजाद भी इस कमेटी के सदस्य थे। 1930 के अंत में कमेटी ने रिपोर्ट प्रस्तुत की। सारे देश में भ्रमण करके जनता के विचारों के आधार पर प्रस्तुत की गई इस

रिपोर्ट में केशरिया झंडे को ही राष्ट्रीय झंडा बनाने की सिफारिश की गई थी। उनका तर्क था कि श्रीराम के युग से लेकर शिवाजी तक सभी युद्ध केशरिया झंडे की छत्रछाया में ही लड़े गए। महात्मा गांधी ने सोचा हम केशरिया झंडा अपना लेंगे तो अहिन्दू जनमानस में अलगाव की भावना आ सकती है। अतः कमेटी की रिपोर्ट को अस्वीकृत करके उन्होंने तिरंगे झंडे को ही यह सम्मान दिया। उन्होंने हिन्दू का रंग केशरिया, मुस्लिम का हरा तथा अन्य सब के लिए सफेद रंग की पट्टी को प्रतीक माना। श्रम के प्रतीक स्वरूप चरखे का चिन्ह माना। इसी झंडे को लेकर आजादी की लड़ाई लड़ी गई। क्रांतिकारी भी इसी झंडे के लिए बलिदान हुए।

1946 में जब आजादी मिलने का निश्चय हो गया तो एक संविधान सभा बनाई गई। इस सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद थे तथा संयोजक सचिव डॉ. भीमराव आंबेडकर।

संविधान सभा के प्रत्येक धारा पर वाद-विवाद करने के पश्चात् भारतीय संविधान का निर्माण किया जो 26 दिसंबर, 1949 को पूर्ण हुआ। इसी संविधान को 26 जनवरी,

1950 को लागू किया गया। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को प्रथम राष्ट्रपति चुना गया। डॉ. आंबेडकर विधिमंत्री बने। इस संविधान सभा ने राष्ट्रीय झंडा तिरंगा तो बनाए रखा परन्तु चरखे की जगह अशोक चक्र निध ीरित किया। रंगों की व्याख्या भी बदल दी। केशरिया रंग वीरता एवं त्याग का प्रतीक बताया गया। श्वेत रंग को शक्ति और एकता का प्रतीक माना, जबकि हरा रंग हरियाली वैभव तथा समृद्धि का द्योतक माना गया। अशोक चक्र में 24 अरे होते हैं जो दिन-रात चौबीस घंटे परिश्रम करने के प्रतीक कहे गए हैं। 22 जुलाई, 1947 को इसे राष्ट्रीय ध्वज का दर्जा दिया गया। 15 अगस्त, 1947 को लालकिले पर यही झंडा प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने फहराया था। इसका आकार सदा 2:3 के अनुपात में ही रखा जाता है। केशरिया रंग की पट्टी ऊपर तथा हरी पट्टी नीचे की ओर ही होती है। जब भी इसे फहराया जाता है तभी राष्ट्रगान गाया जाना चाहिए। ❐

कार्यकर्ता परिचय

81 साल के 'युवक' शर्मा जी

श्री राजेन्द्रपाल शर्मा जी सेवा भारती, यमुना विहार विभाग में वरिष्ठ उपाध्यक्ष हैं। इनका जन्म 12 मार्च, 1939 को पंजाब के नारोवाल शहर में हुआ था जो आज पाकिस्तान में है। पिता दुर्गादास शर्मा जी भी स्वयंसेवक थे। वे पटवारी के नाते काम करते थे। विभाजन के बाद पहले अमृतसर पहुंचे थे फिर हरियाणा में रह कर पढ़ाई की। मैट्रिक तो अमृतसर से ही 1955 में कर लिया था। हरियाणा से दो साल का मैकेनिकल डिप्लोमा पास किया। 1965 की मकर संक्रान्ति (14 जनवरी) को परिवार सहित शाहदरा आए।

बड़े भाई आर्मी के डाक विभाग में थे। शाहदरा में नियमित स्वयंसेवक रहे। जिला कार्यवाह अविनाश जी तथा जिला संघचालक सत्यनाराण जी एवं विभाग कार्यवाह भगवान दास जी की प्रेरणा से संघ शिक्षा प्रथम वर्ष 2005 में, द्वितीय वर्ष 2006 में तथा नागपुर में तृतीय वर्ष 2007 में शिक्षण लिया। इस शिक्षण के पश्चात सेवा भारती में तथा संघ में विभिन्न दायित्व संभाले। संघ के वर्गों में राजेन्द्र जी 11 बार प्रबंधक भी रहे। नगर कोषाध्यक्ष, गीत गायक, जिला मंत्री, विभाग सहमंत्री, उपाध्यक्ष आदि दायित्व निभाते हुए निरन्तर सेवा कार्य में लगे रहे। उनसे चर्चा करें तो वे स्वयं बताते हैं कि उन्होंने प्रेम कुमार जी, अजय कुमार जी, ज्ञान प्रकाश जी, वीना महतो जी, संरक्षक मायाराम जी तथा स्व. युधिष्ठिर जी से सेवा करने की रीति-नीति सीखी। कार्यकर्ताओं का निर्माण, शिक्षिका एवं निरीक्षिका बहनों से व्यवहार, बस्ती में सम्पर्क करना, दानदाताओं से दान प्राप्त करने की पद्धति सीखी। उत्सवों पर प्रबंध कौशल तथा धन संग्रह एवं उचित व्यय में पारदर्शिता रखने में संस्कार प्राप्त किए।

– आचार्य मायाराम पतंग

रक्षासूत्र बना समरसता-सूत्र

○ दीप्ति अग्रवाल

रक्षाबंधान के अवसर पर सेवा भारती दिल्ली की कुछ बहनों ने पहले राखियां तैयार कीं और बाद में वे राखियां समाज के विभिन्न वर्ग के लोगों को बांधी गईं। इससे दो प्रकार के लाभ हुए-एक बहनों को रोजगार मिला, दूसरा, समाज में समरसता का भाव पैदा हुआ।

केशव पुरम विभाग की बहनों दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष श्री रामनिवास गोयल के पास जाकर भेंट स्वरूप अपनी स्वयं की निर्मित राखियां भेंट कीं। पश्चिमी विभाग की बहनों ने स्वदेशी व प्लास्टिक रहित रक्षाबंधन किट तैयार किया। उन्होंने सशस्त्र सीमा बल के भाइयों को रक्षा सूत्र बांधकर उनका आभार व्यक्त किया व भाइयों ने भी बहनों को यथोचित सम्मान दिया।

पूर्वी विभाग की बहनों ने केंद्रीय मंत्री डॉक्टर हर्षवर्धन व श्री रविशंकर प्रसाद व अन्य गणमान्य लोगों को अपने हाथ से बनी राखियां भेंट कीं।

उत्तरी विभाग की बहनें लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला व श्री सांसद गौतम गंभीर जी के पास गईं।

आर के पुरम की बहनों ने साउथ वेस्ट के डीसीपी श्री राहुल सिंह व उनके कर्मचारी को राखी व काढा दिया। साथ ही क्षेत्र के एसएचओ यादव जी एवं दक्षिणी जिला के डीएम मिश्रा जी को राखी भेंट की।

दक्षिणी विभाग की बहनों ने डॉक्टर सर्वेश टंडन, जोकि स्वास्थ्य मंत्रालय में ओएसडी हैं, के साथ-साथ सांसद अनुराग ठाकुर, सांसद रमेश बिधूडी और दिल्ली विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष रामवीर सिंह बिधूडी को राखी भेंट की।

इसके अलावा अन्य विभागों की बहनों ने भी अपने-अपने क्षेत्र के पुलिस विभाग के भाइयों, सफाई कर्मचारियों, अस्पताल के कर्मचारियों व सुरक्षा कर्मचारियों को रक्षासूत्र बांधकर उन सभी का धन्यवाद किया।

सेवा भारती की बहनों ने इन सभी को राखी भेंट कर या बांधकर उनकी सेवाओं के प्रति अपना आभार व्यक्त किया। ❐

न छोड़ें सकारात्मकता का साथ

❍ **डॉ. आराधना शर्मा,** मनोवैज्ञानिक

एक स्वस्थ शरीर में एक स्वस्थ मन का वास होता है। शारीरिक स्वास्थ्य पर सदैव ही जोर दिया जाता है परन्तु मानसिक स्वास्थ्य को हम नजरअंदाज कर देते हैं।

क्या है मानसिक स्वास्थ्य? अपने विचारों और भावनाओं पर नियंत्रण रखने की क्षमता, दूसरों की भावनाओं को समझने की क्षमता, विपरीत परिस्थितियों में विचलित हुए बिना समस्याओं का समाधान ढूंढने का साहस रख पाना और हर परिस्थिति में धैर्य रख पाना मानसिंक सुदृढ़ता के कुछ मानक हैं ।

यथास्थिति को स्वीकार कर, सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ते हुए हम मानसिंक सुदृढ़ता का परिचय दे सकते हैं मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए शारीरिक स्वास्थ्य का नियमित रूप से ख्याल रखना अति आवश्यक है। समय पर सोना, समय पर उठना, संतुलित आहार लेना, ताजे फल एवं सब्जियों का सेवन, मैदा, तेल और चीनी-युक्त आहार से परहेज करना और स्वच्छ जल पीना, हमारे स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। साथ ही नियमित रूप से व्यायाम एवं योग न केवल हमारे शारीरिक स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है, अपितु चित की एकाग्रता और मन को शांत रखने में सहायता करता है।

मानसिक संतुलन बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि-

- हमारे जीवन में कुछ लक्ष्य हों- लक्ष्य हमें कार्यशील रहने के लिए प्रेरित करते हैं ।
- हमारे जीवन में नियम होने अति आवश्यक हैं -नियमबद्ध रूप से जीवन का संचालन करने से हम अपने समय का सदुपयोग तो करते ही हैं, साथ ही यह हमें तनाव मुक्त रहने में मदद करता है।

- परिवारजनों और मित्रों के साथ समय बिताना- सबके साथ मिलजुल कर हंसी-खुशी समय बिताने से हम तनाव से छुटकारा पा सकते हैं।
- आशा केवल अपने से रखिए, दूसरों से नहीं। जो मिल गया वह सौभाग्य है, दूसरों से अपेक्षा न करें। अपेक्षा दुख का मूल कारण है।
- माफ करने की आदत डालिए।
- जो नहीं है उसे अपने भविष्य के लक्ष्यों में रखें। जो है उसके लिए ईश्वर/प्रकृति का आभार मानिए।
- अपने काम के अतिरिक्त कुछ शौक रखिए- समय-समय पर कुछ नया करते व सीखते रहिए। ऐसा करने से जीवन में नयापन और विविधता बनी रहती है।
- सदैव मुस्कराते रहिए- आपकी मुस्कान न केवल आपके मुखमंडल की आभा बढ़ाती है, आपका मन शांत रखती है। ❐

विनीता की दो भावपूर्ण कविताएँ

सुषमा जी की याद में

सुषमा जी की आँखों में,
उनकी शोभा बरसती थी।
मांग सिन्दूर माथे बिन्दिया,
रहती सदा चमकती थी।

ऐसी सौम्य और कर्मठ नारी को,
श्रद्धा सुमन है अर्पित।
अपने देश के कामों में,
रहती थी सदा वो समर्पित।

अपने नाम को सब जगह,
अमर वह कर गई।
अपने देश की बहादुर बेटी,
सदा सुहागिन चली गई। ❑

उत्सव आया

बहु प्रतीक्षित उत्सव आया,
भारती में हर्षोल्लास छाया।
अयोध्या को है खूब सजाया,
सूर्यवंश में आनन्द समाया।

प्रभु की देखो कैसी माया,
सब सोते हुओं को जगाया।
ऋषि मुनियों ने आशीष दिलाया,
देवों ने सुमन बरसाया।

मन मेरे में भी आनन्द छाया,
रामजी को मन मन्दिर में बैठाया।
ये सब राम जी को भाया,
जिन्होंने ये शुभ अवसर बुलवाया।
'राम जी की जय' ❑

वे पाँच भाई

❍ अरुणिमा देव

एक बूढ़ी महिला के पाँच बेटे थे। देखने में पाँचों एक जैसे ही लगते थे। केवल उनकी माँ ही उनमें अंतर खोज सकती थी। लेकिन पांचों में अलग-अलग गुण थे। पहले बेटे का नाम था राम। वह 5 मिनट तक अपने मुँह में समुद्र का पानी रोक सकता था। दूसरा बेटा किशोर अपने पैर बहुत ऊँचे कर सकता था। तीसरा बेटा श्याम बहुत शक्तिशाली था। उसकी पीठ मानो लोहे की बनी हो। चौथा बेटा अर्जुन आग में भी जीवित रह सकता था। सबसे छोटा बेटा जीवन 1 दिन के लिए अपनी सांसें रोक सकता था। ये पाँचों भाई मछली बेचने का काम करते थे। मछली पकड़ने के लिए राम अपने मुँह में समुद्र का पानी भर लेता और बाकी चार भाई मछली पकड़ लेते। बाकी मछुआरे उन पाँचों भाइयों से बड़ी ईर्ष्या करते थे। वे जानना चाहते थे कि ये पाँचों भाई इतनी मछलियां कैसे पकड़ लेते हैं! यह बात जानने के लिए कुछ मछुआरे एक दिन राम के पास गए। राम ने कहा कि कल भोर में मुझे समुद्र तट पर मिलना। भोर को सभी मछुआरे समुद्र तट पर पहुँच गए। थोड़ी देर में अपने भाइयों के बिना राम भी वहाँ आ गया। उसने मछुआरों से कहा कि वह पाँच मिनट तक समुद्र का पानी अपने मुँह में रख लेगा और तुम लोग इसी बीच में मछली पकड़ लो। उसने यह भी कहा कि पाँच मिनट से पहले ही सभी समुद्र से बाहर आ जाना। इसके बाद उसने अपने मुँह में समुद्र का पनी भर लिया और मछुआरे मछली पकड़ने लगे। लेकिन पाँच मिनट बाद भी मछुआरे समुद्र से बाहर नहीं निकले और उधर राम परेशान था। उसने उन लोगों को निकलने का इशारा भी किया, लेकिन वे लोग मछली पकड़ने में इतने मग्न थे कि उन्हें राम का इशारा ही नहीं दिखा। आखिर में राम को अपने मुँह से पानी छोड़ना पड़ा। इससे बहुत सारे मछुआरे समुद्र में डूब कर मर गए। यह सुनकर मछुआरों के गाँव में कोलाहल मच गया। लोगों ने राजा के पास राम की शिकायत की। राजा ने राम को दरबार में बुलाया तो राम ने कहा, ''महाराज, मैं सिर्फ 5 मिनट तक अपने मुँह में समुद्र का पानी रोक सकता हूँ, लेकिन उन सबने बहुत देर लगा दी। अगर मैं अपना मुँह नहीं खोलता और पानी बाहर नहीं निकलता तो मेरा गला फट जाता।'' राजा ने राम के ऊपर यकीन नहीं किया और उसने उसे उसी समुद्र में डूबा कर मारने की आज्ञा दी और राम से पूछा कि तुम्हारी आखिरी इच्छा क्या है! राम ने बोला कि मुझे अपने भाइयों और माता से मिलना है। राजा ने उसे आज्ञा दी। राम घर गया और अपने भाई किशोर से कहा भाई राजा ने मुझे समुद्र में डूबा कर मारने का आदेश दिया है। तुम अपने पैर बड़े कर सकते हो तो तुम कल राजा के दरबार में जाना। किशोर अगले दिन महाराजा के महल में गया। महाराजा उसे समुद्र किनारे ले गए और समुद्र में घुसने के लिए कहा। जैसे-जैसे किशोर समुद्र के अंदर जाता रहा वह अपने पैरों को बड़ा करता गया। यह देखकर गाँव वालों ने महाराजा को कहा कि यह तो ऐसे कभी नहीं मरेगा। महाराजा ने अगला आदेश दिया कि इसका गला काट दिया जाए। महाराजा ने फिर से उसकी अंतिम इच्छा पूछी। उसने भी कहा कि वह अपनी माता और भाइयों से मिलना चाहता है। ऐसा ही हुआ, किशोर भी (लेकिन राजा की नजर में वह राम था) राजा की अनुमति से घर आ गया। दूसरे दिन राजा के पास श्याम को भेजा गया। श्याम बहुत शक्तिाली था। उसका शरीर

वज्र के समान था। इसलिए जब उसकी गर्दन पर तलवार चलाई गई तो तलवार ही टूट गई। अब राजा ने निर्णय लिया कि राम को आग में जलाकर मार डालेंगे। लेकिन इससे पहले फिर उससे अंतिम इच्छा पूछी गई। उसने भी वही कहा जो अन्यों ने कहा। इसलिए उसे घर जाने दिया गया। दूसरे दिन अर्जुन को भेजा गया। राजा के आदेश पर अर्जुन को आग में फेंक दिया गया, लेकिन उसे भी कुछ नहीं हुआ। राजा परेशान हो गया। राजा ने कहा कि अब जमीन के अंदर गाड़ कर मारा जाएगा। लेकिन उससे पहले फिर एक बार उसकी अंतिम इच्छा पूछी गई। उसने भी वही कहा और उसे भी घर जाने दिया गया। दूसरे दिन उन भाइयों ने राजा के पास जीवन को भेजा, जो एक दिन तक अपनी सांस रोक सकता था। राजा ने उसे जमीन के अंदर गाड़ने का आदेश दिया। लोगों ने सोचा कि अब राम मर गया, लेकिन वह तो जीवन था और उसने एक दिन तक सांस को रोक लिया इसलिए वह मरा नहीं। अगले दिन जीवन को उसके भाइयों ने जमीन से निकाल लिया।

इस कहानी का संदेश है कि व्यक्ति यदि सही होता है तो उसे कुछ देर परेशान तो होना पड़ता है, पर वह पराजित नहीं होता है। ❒

बंगाल में बन रहा है 113 मीटर ऊँचा श्रीकृष्ण मंदिर

❍ निशान्त

अभी-अभी जन्माष्टमी यानी भगवान् श्रीकृष्ण का जन्मदिन मनाया गया है। श्रीकृष्ण को लीलाधर भी कहते हैं। उन्होंने जन्म ही लीलाओं के साथ लिया था। इनकी जैसी मनमोहक और अनुपम जीवनलीला और किसी भी देवता की नहीं। श्री विष्णु के दस अवतारों में से आंठवाँ अवतार श्रीकृष्ण का था। भगवान् विष्णु के सभी दस अवतारों (मत्स्य, कूर्म, वराह, नरसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, गौतम बुध्द और कल्कि) में से सर्वाधिक अनुपम और अद्वितीय श्रीकृष्णावतार है।

श्रीकृष्ण के लिए सबसे बड़ी चीज थी मित्रता। जब उनके परम मित्र सुदामा उनसे मिलने द्वारका पहुँचे तो सुदामा अपनी दरिद्रता के कारण द्वारकाधीश श्रीकृष्ण से मिलने से झिझक रहे थे, लेकिन श्रीकृष्ण का अपने मित्र के प्रति प्रेम देखकर भावविभोर हो गए। और ऐसा कहा जाता है कि प्रभु ने स्वयं अपने अश्रुओं से उनके पैर पखारे (धोए) थे।

अब तो पूरी दुनिया में श्रीकृष्ण के भक्त हैं। इस्कॉन के संस्थापक श्रील प्रभुपाद और कुछ अन्य संतों ने भारत के बाहर श्रीकृष्ण की भक्ति का ऐसा दीपक जलाया कि उसकी ताप के प्रभाव से बड़ी संख्या में विदेशी भी हिन्दू बनने लगे हैं। ऐसे ही एक विदेशी हैं अल्फ्रेड फोर्ड, जा अब अंबरीश दास के नाम से दुनिया में जाने जाते हैं। ये अमेरिका की बहुत ही प्रसिद्ध कार कंपनी फोर्ड के मालिक हैं। अब श्रीकृष्ण की भक्ति में ऐसे लीन हो गए हैं कि इन दिनों वे पश्चिम बंगाल के नदिया जिले में स्थित मायापुर में भगवान् श्रीकृष्ण का 113 मीटर ऊँचा मंदिर बनवा रहे हैं। अंबरीश फोर्ड मोटर्स के संस्थापक हेनरी फोर्ड के पोते हैं। मंदिर की कुल लागत 800 करोड़ रु. है। इसमें 250 करोड़ रु अकेले अंबरीश ने दिए हैं। ❒

चित्रों में रक्षाबंधन

रक्षाबंधन के अवसर पर इस बार सेवा भारती की बहनों ने बहुत ही अनूठा कार्य किया। हर वर्ग के लोगों को रक्षासूत्र बांधा और उनसे अपने कार्य के द्वारा देश की रक्षा करने का वचन लिया। यहां प्रस्तुत हैं रक्षाबंधन के कुछ चित्र–